P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-7* (Part-1) October- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

गाँधी चिन्तन में व्यक्ति

गुलाब चन्द्र मीना
सह–आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बांदीकुई, राजस्थान

सारांश

गाँधी विचारधारा का केन्द्र बिन्दु सत्य और अहिंसा है। गाँधी जी का सामाजिक दर्शन भी इन्हीं विचारों से अनुप्राणित है। गाँधी जी ने अहिंसा को सामाजिक सद्‌गुण माना है। गाँधी चिन्तन में व्यक्ति का स्थान सर्वोपरि माना है। स्वयं गाँधी जी ने कहा था कि व्यक्ति कभी बुरा नहीं होता है बल्कि उनकी व्यवस्था भले ही गलत हो सकती है। गाँधी जी ने व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिये संघर्ष किया। तथापित सामाजिक कर्त्तव्य की उपेक्षा नहीं की। वे कहते हैं – ''मैं व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को बहुमूल्य मानता हूँ किन्तु तुम्हें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य तत्वतः सामाजिक प्राणी है। अपनी व्यक्तिवादिता को समजित करना सीख कर ही वह वर्तमान स्थिति तक उठ सका है। व्यक्तिवादिता तो जंगली जानवरों का कानून है। हमने सम्पूर्ण समाज के कल्याण के लिए (प्रत्येक व्यक्ति जिसका अंग है) व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं सामाजिक नियन्त्रण का मध्य मार्ग चुनना सीखा है।

मुख्य शब्द : गाँधी, चिन्तन, विचारधारा, अहिंसा

प्रस्तावना

गाँधी दर्शन वर्तमान विश्व में व्याप्त विषमता का महत्वपूर्ण हल प्रस्तुत करता है। ''एक और स्वतन्त्रता, समानता, बन्धुत्व न्याय के भावों को बढ़ाने पर जोर दिया जाता है। मनुष्य को पहले से अधिक सुविधायें मिल गई हैं, उसकी चेतना का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। आमदरफ्त के साधनों में क्रान्ति होने के कारण विचारों का प्रवाह अन्तर्राष्ट्रीय हो गया है। पीड़ितों व दुखियों के लिए विज्ञान और समाज में काफी सहूलियत दे रखी है। अन्धों के स्कूल खुल गये हैं, बहरे यन्त्र की सहायता से सुन सकते हैं। असाध्य रोगों को साध्य बनाने में विज्ञान प्रयत्नशील है। स्वास्थ्य सफाई पर अधिक बल दिया जाता है। स्त्रियों के जीवन में प्रकाश, आनन्द, स्वच्छता व स्वतन्त्रता का वातावरण उत्पन्न करने के प्रयत्न जारी हैं। बेगार प्रथा, अस्पृश्यता, दास प्रथा समाप्त कर दी गई है। अकाल, बाढ़, भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने के लिए संगठित साधनों की खोज की गई है। साक्षरता, प्रसार, जन–संचार के साधनों का विकास हुआ है। यात्रा पहले से अधिक सस्ती व सुविधाजनक हो गई है। सभ्य समाज में जानवरों के प्रति उदारता, दया, रक्षा व सुधार का व्यवहार बढ़ रहा है। अनेक प्रकार से मानव जीवन को सुखद बनाने के प्रयत्न किये जा रहे हैं।

गाँधी चिन्तन में इस बात पर बल दिया गया है कि व्यक्ति व समूल में सहयोग उत्पन्न जीवन की प्रधान आवश्यकता है। सच्ची और अस्थाई उन्नति के लिए व्यक्तिगत व सामूहिक दोनों प्रकार का विकास आवश्यक है।

गाँधी जी सभी व्यक्तियों के लिये अवसर को समानता प्रदान करने का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार ऐसा अवसर मिलने पर प्रत्येक मानव प्राणी के आध्यात्मिक विकास की सम्भावना एक सी रहती है।

गाँधी जी के अनुसार व्यक्ति की स्वतन्त्रता तथा सामाजिक कर्त्तव्य के बीच संघर्ष का मूल कारण राज्य का हिंसात्मक स्वरूप है। वह इस बात का फल है कि कुछ व्यक्ति दूसरों का शोषण करने पर तुले रहते हैं। अहिंसा पर आधारित एक समाज में, जिसमें शोषण नहीं हो सकता, इस संघर्ष के लिये कोई स्थान नहीं है। मनुष्य जितना अधिक अहिंसा, सत्य तथा प्रेम को अपनायेंगे और परस्पर सेवा और सहयोग करेंगे, व्यक्ति को स्वतन्त्रता तथा सामाजिक कर्त्तव्य के बीच संघर्ष के अवसर उतने ही कम हो जायेगे।

गाँधी जी के अनुसार जो लोग आन्तरिक स्वतन्त्रता अथवा स्वराज्य प्राप्त कर चुके हैं, वे जानते हैं कि सच्ची आत्मानुभूति का सर्वोत्तम साधन निष्काम लोक सेवा है। एक अहिंसापूर्ण लोकतन्त्र में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता सामाजिक कर्त्तव्य पालन का ही दूसरा नाम है। यह है उस प्राचीन हिन्दू आदर्श का पुनरुत्थान जो कि धर्म को सामाजिक संगठन व्यक्ति तथा समाज के बीच समुचित सम्बन्धों का आधार मानता है।

गाँधी जी ने व्यक्ति और समाज के बीच संघर्ष नहीं बल्कि पूर्ण सामंजस्य को सत्य माना है। गाँधी जी के अनुसार व्यक्ति न केवल समाज में जब तक समष्टिगत सम्बन्धों में प्रेम, सत्य, उदारता, सहयोग, सहिष्णुता इत्यादि मानवोचित गुणों द्वारा नहीं अपनाया जाता तब तक समाज और व्यक्ति दोंनों के जीवन अन्धकार दुःख व अतृप्ति से भरे रहेंगे।

गाँधी जी हिंसा, धूर्तता, युद्ध और अविश्वास के युग में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र व पथ में सत्य और अहिंसा की अनिवार्यता में दृढ़ विश्वास व्यक्त किया। कहने का तात्पर्य यह है कि समष्टिगत सम्बन्धों में अहिंसा का सदाचरण का समावेश ही हमारी सामाजिक समस्याओं का हल है। मानव समाज की गति इसी प्रेम साधना की ओर रही है। उसका सुधार परिष्कार और विकास इसी को लेकर हुआ है। इसे अपनायें बिना उसे गति नहीं चाहे कोई इसे स्वीकार करें या अस्वीकार, अन्त में इसी की विजय होगी।

रामनाथ सुमन ने लिखा ''गाँधीवाद व्यक्ति और समष्टि के संघर्ष को इस प्रकार दूर करना चाहता है, उसकी घोषणा है कि दोनों के सहयोग से ही मानवता की सच्ची उन्नति सम्भव है। व्यक्ति के लिए उसका उद्देश्य आत्मशुद्धि तथा समाजहित के लिये स्वार्थ त्याग है। समाज के लिए उसका सन्देश व्यक्ति की स्वतन्त्रता की रक्षा करते हुये सामूहिक सम्बन्धों में सात्विकता, स्वच्छता, प्रेम और सहयोग अपनाना है। दोनों में जो विषमता आज है उसे दूर किये बिना संसार में शान्ति नहीं हो सकती। दोनों को सदाचरण के एक ही धरातल पर खड़ा करना पड़ेगा तभी सामूहिक वंचना, शोषण, पाखण्ड, अन्याय और विषमता का अन्त होगा। गांधीवाद ने केवल रोग का निदान ही नहीं किया है वरन् उस रोग को दूर करने तथा समाज की काया व मानस को निरोग एवं स्वस्थ रखने के लिए क्रियात्मक उपायों की भी खोज की है। संसार में समता और शान्ति लाने के लिए अहिंसा और सत्याग्रह की युद्धनीति का पूरा विज्ञान ही उसने हमें भेंट किया है। यह गाँधी जी की मानवता को बहुत बड़ी देन है।''

गाँधी जी का सामाजिक लक्ष्य रामराज्य अर्थात् ईश्वरी राज्य था। उन्होंने इसका अर्थ शुद्ध नैतिक अधिकार पर आधारित जनता का राज्य और पृथ्वी पर धर्म राज्य बतलाया। रामराज्य के आगमन के लिये व्यक्ति का नैतिक विकास अत्यन्त आवश्यक है। वहीं इसकी नींव और आधार है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर और पृथ्वी पर ईश्वरीय राज्य का अनुभव करना और अपनी आत्मा की आवाज का अनुसरण करना है। गाँधीवादी सिद्धान्त के अनुसार राज्य समाज दमन शक्ति के अभाव में केवल नागरिकों की स्वैच्छिक सच्चरित्रता पर ही टिक सकता है। चरित्र निर्माण के लिये यह आवश्यक है कि प्रत्येक मनुष्य, प्रेम, कर्त्तव्य और त्याग की भावना और दूसरों के अधिकारों के प्रति सम्मान से प्रेरित हो। ये सभी गुणों से व्यक्ति, स्वार्थ, लालच और शक्ति के मद से दूर होंगे। इसलिये चाहे समाज राज्य–विहीन हो, चाहे रामराज्य, उसका अस्तित्व नागरिकों की नैतिक उन्नति पर ही आधारित है। इसलिए गाँधीजी ने मनुष्य के सर्वतोन्मुखी विकास पर बल दिया है।

गाँधी जी के शब्दों में स्वतन्त्रता मनुष्य के विकास के लिए बहुत जरूरी है। कोई गुलाम या गूँगे की तरह हाकी जाने वाली प्रजा रामराज्य की रीढ़ नहीं बन सकती। गुलाम ऐसे वातावरण में काम करता है जिसमें स्वतः विचार और चरित्र नष्ट हो जाता है। इसलिये गाँधी ने व्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता को उन सामाजिक प्रतिबन्धों के साथ जो दूसरे व्यक्तियों की स्वतन्त्रता और कल्याण के लिये आवश्यक हो, अपना लक्ष्य बनाया।

गाँधी चिन्तन में व्यक्ति का स्थान सर्वोपरि मानते हुए गाँधी जी का लक्ष्य एक ऐसा समाज बनाना है, जिसमें न कोई ऊँचा होगा न नीचा और न कोई गरीब होगा और न ही भिखारी होगा। न कोई करोड़पति मालिक होगा और न आधा भूखा नौकर। न शराब होगी, न कोई दूसरी नशीली चीज। सब अपने आप खुशी से और गर्व से अपनी रोटी कमाने के लिए मेहनत करेंगे। वहां स्त्रियों की भी वही इज्जत होगी, जो पुरुषों की, स्त्रियों और पुरुषों के शील और पवित्रता की रक्षा की जायेगी।

गाँधी जी का रामराजय एक आदर्श है। गाँधी जी का विचार था कि जब तक रामराज्य साकार होता है तब तक राजनैतिक ढांचें को लक्ष्य के अनुकूल और लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में ले जाने वाला होना चाहिए। उनका कहना था कि ''जीवन में आदर्श की पूरी सिद्धि कभी नहीं होती। इसलिए थोरों ने कहा कि जो सबसे कम शासन करें वही उत्तम सरकार है।'' यही गाँधी जी का विचार है।

गाँधी चिन्तन में व्यक्ति को सर्वोपरि मानते हुए गाँधी जी व्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता को समर्थन देते थे तथा व्यक्ति पर किसी भी प्रकार के बाहरी नियन्त्रण के विरोधी थे। उनके विचार से व्यक्ति ही सर्वोच्च है और उनके विकास में ही मनुष्य का भविष्य निहित है। व्यक्ति साध्य है। राज्य उसकी आत्मानुभूति के लिए एक साधन है। उसका अस्तित्व व्यक्ति के सर्वोपरि विाकस में सहायता करने के लिए है। इसलिये उसमें सदैव सेवा भावना बनी रहनी चाहिये उसे अपने को उसका स्वमी कभी नहीं समझना चाहिए। इस सम्बन्ध में गाँधी जी ने अपने विचार प्रकट किये हैं।

यदि व्यक्ति की स्वतंत्रता चली जाती है तो निश्चित रूप से सब कुछ चला जाता है, क्योंकि यदि कोई व्यक्ति सदस्यता में नहीं रहता, तो समाज में क्या बचता है। केवल व्यक्ति स्वतन्त्रता ही व्यक्ति को समाज की सेवा में स्वेच्छा से समर्थन करने के लिये प्रेरित करती है। यदि उससे यह स्वतन्त्रता छीन भी ली जाये तो वह एक यन्त्र मात्र बन जाता है और समाज बरबाद हो जाता है। व्यक्ति स्वतन्त्रता के अभाव के आधार पर किसी भी समाज का निर्माण नहीं किया जा सकता। यह स्थिति स्वयं मनुष्य की प्रकृति के विरुद्ध है।

गाँधी दर्शन के अनुसार हर एक मनुष्य को अपनी शक्तियों का उपयोग करने की पूरी–पूरी स्वतत्रता होनी चाहिए कि जिसमें उसके पड़ोसियों को वैसी ही स्वतन्त्रता में कोई बाधा नहीं पड़े और उनकी इस

स्वतन्त्रता के साथ उसकी स्वतन्त्रता सुसंगत रह सके। लेकिन उन शक्तियों से प्राप्त होने वाले लाभों का मनमाना उपयोग करने का किसी को अधिकार नहीं है।

गाँधी जी ने व्यक्ति को समूचे संसार में सर्वोपरि मानते हुए व्यक्त किया है ''बालबल की भाषा में कहूँ तो मनुष्य सारी दुनिया को जीत ले, पर यदि अपनी आत्मा खो दे तो उसमें उसका क्या श्रेय हो सकता है। आधुनिक भाषा में कहे तो मनुष्य अपना व्यक्तित्व खो दे और यन्त्र की एक जड़ की तरह मात्र बन जाये, तो उसके मानवीय गौरव के लिए यह चीज कलंक रूपी होगी। मैं चाहता हूँ कि हर व्यक्ति समाज का पूर्ण संस्कारी, पूर्ण विकसित अंश बन जाये।

गाँधी जी सभी व्यक्तियों के लिए अवसर को समानता प्रदान करने का समर्थन करते हैं। उनके अनुसार ऐसा अवसर मिलने पर प्रत्येक मानव प्राणी के आध्यात्मिक विकास की सम्भावना एक ही रहती है।

गाँधी जी के अनुसार व्यक्ति की स्वतन्त्रता तथा सामाजिक कर्त्तव्य के बीच संघर्ष का मूल कारण राज्य का हिंसात्मक स्वरूप है। वह इस बात का फल है कि कुछ व्यक्ति दूसरों का शोषण करने पर तुले रहते हैं। अहिंसा पर आधारित एक समाज में, जिसमें शोषण नहीं हो सकता, इस संघर्ष के लिये कोई स्थान नहीं है। मनुष्य जितना अधिक अहिंसा, सत्य तथा प्रेम को अपनायेंगे और परस्पर सेवा और सहयोग करेंगे व्यक्ति को स्वतंत्रता तथा सामाजिक कर्त्तव्य के बीच संघर्ष के अवसर उतने ही कम हो जायेंगे।

गाँधी जी के अनुसार जो लोग आन्तरिक स्वतन्त्रता अथवा स्वराज्य प्राप्त कर चुके हैं वे जानते हैं कि सच्ची आत्मानुभूति का सर्वोत्तम साधन निष्काम लोकसेवा है। एक अहिंसापूर्ण लोकतंत्र में व्यक्तिगत स्वतंत्रता सामाजिक कर्त्तव्य पालन का ही दूसरा नाम हे। यह है उस प्राचीन हिन्दू आदर्श का पुनरुत्थान जो कि धर्म को सामाजिक संगठन व्यक्ति तथा समाज के बीच समुचित सम्बन्धों का आधार मानता है।

गाँधी जी ने व्यक्ति और समाज के बीच संघर्ष नहीं बल्कि पूर्ण सामंजस्य को सत्य माना है। गाँधी जी के अनुसार व्यक्ति न केवल समाज का एक घटक है, वरन् वह समाज का निर्माता है। व्यक्ति ने अपने श्रेष्ठतर स्वार्थों एवं सुख–सुविधाओं के लिऐ समाज का निर्माण किया है, मूल वस्तु व्यक्ति है, समाज नहीं। समाज शरीर है, व्यक्ति प्राण है। गाँधी के लिये व्यक्ति को समाज से अलग करना, व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अन्याय है। गाँधी के समाज के नवनिर्माण में प्रथम स्थान व्यक्ति का है।

गाँधी अपने निर्माण का कार्य व्यक्ति की अन्तर्आत्मा से प्रारम्भ करते हुए वातावरण के सुधार की ओर बढ़ते हैं। यद्यपि समाज के पुनः निर्माण सम्बन्धी अपने नियोजन में वे व्यक्ति को अधिक महत्व देते हैं क्योंकि वहीं इसका प्रणेता व सूत्रधार होता है परन्तु वे संस्थागत सुधार पर भी ध्यान देते हैं।

निष्कर्ष

गाँधी जी व्यक्ति की स्वतन्त्रता के पक्षशोषक होते हुए भी व्यक्ति की निरंकुशता का समर्थन नहीं करते थे। गाँधी जी के शब्दों में ''मैं व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की कीमत करता हूँ, परन्तु आपको यह नहीं भूलता चाहिए कि मनुष्य मुख्यतः एक सामाजिक प्राणी है। अपने व्यक्तिवाद को सामाजिक प्रगति की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाना सीखकर वह अपने मौजूदा ऊँचे दर्जे पर पहुँचता है। अनियंत्रित व्यक्तिवाद जंगली जानवरों का कानून है। हमें व्यक्तिगत, स्वातन्मय और सामाजिक संयम के बीच के रास्ते पर चलना सीखना होगा । हमारे समाज की भलाई के लिऐ सामाजिक संयम को खुशी से मानना व्यक्ति और समाज जिसका सदस्य व्यक्ति है, दोनों को समृद्ध करता है।

सन्दर्भ सूची

1. *गाँधी : हरिजन, 7, 1, 39*
2. *गोपीनाथ दीक्षित : गाँधीजी की चुनौती कम्युनिज्म को, पृ0 179 (नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद, जनवरी, 1974)*
3. *महावेद प्रसाद वर्मा – महात्मा गाँधी का समाज दर्शन, हरियाणा साहित्य अकादमी, चण्डीगण 170–76*
4. *गाँधी हरिजन सेवक – पृ0 466 (18, 1, 48)*
5. *गाँधी – यंग इण्डिया (2.7.1931)*
6. *महात्मा गाँधी : मेरे सपनों का भारत, पृ0 85 (नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद, मार्च 1962)*
7. *गोपीनाथ दीक्षित – गाँधी जी की चुनौती कम्युनिज्म को, पृ0 57*
8. *जे.पी.सूद – प्रमुख राजनीतिक विचारक (के0 नाथ एण्ड कम्पनी, मेरठ) पृ0 59*
9. *गाँधी हरिजन पृ0 27 (1 फरवरी, 1942)*
10. *कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी, खण्ड 36, पृ0 102*
11. *कलेक्टेड वर्क्स ऑफ महात्मा गाँधी, खण्ड 34, पृ0 505*
12. *राय रामाश्रय, सेल्फ एण्ड सोसायटी, पृ0 106*
13. *आश्रम की महिलाओं के पत्र, अप्रैल 3,1942*
14. *रामनाथ सुमन : गाँधीवाद की रूपरेखा (साधना सदन, इलाहाबाद, पंचम संस्करण, 1951) पृ0 78*